रीतिकाल : नामकरण और कालसीमा

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने सम्वत 1700 वि० से 1900 वि० तक के काल-खण्ड को रीतिकाल कहा है। मध्यकाल को जिन दो काल-खण्डों में बाँटा गया है उनके नाम हैं - पूर्व मध्यकाल और उत्तर मध्यकाल। पूर्व मध्यकाल को भक्तिकाल और उत्तर मध्यकाल को रीतिकाल कहा गया है।

रीतिकाल के लिए जो नाम दिए गए हैं वे इस प्रकार हैं -

- अलंकृत काल → यह नाम मिश्रबन्धुओं ने दिया है।
- श्रृंगार काल → यह नाम विश्वनाथप्रसाद मिश्र ने दिया
- रीतिकाल → यह नाम आ० रामचन्द्र शुक्ल ने दिया है।
- कलाकाल → यह नाम डॉ० रसाल ने दिया है।

मिश्रबन्धुओं का तर्क है कि इस काल में कविता को अलंकृत करने पर अधिक बल दिया गया है, इसलिए इसका नाम अलंकृत काल होना चाहिए, किन्तु इस काल में लक्षण ग्रन्थों की रचना प्रचुर मात्रा में हुई है तथा अलंकृत काल कहने से इस प्रवृत्ति का बोध नहीं हो पाता। अतः यह नाम समीचीन नहीं है।

श्रृंगार काल कहे जाने के पक्ष में यह तर्क दिया गया है कि इस काल के कवियों की व्यापक प्रवृत्ति श्रृंगार वर्णन की थी, किन्तु श्रृंगारी कवियों ने भी काव्यांग निरूपण की ओर रुचि दिखाई है। ऐसी स्थिति में केवल श्रृंगार काल कहने से रीतिकाल की सम्पूर्ण कविता का बोध नहीं हो पाता। काव्यांग चर्चा इस काल की सामान्य प्रवृत्ति थी और कविगण उसमें वैसा ही आनन्द लेते थे जैसा भक्तिकाल में ब्रह्मज्ञान चर्चा में लिया जाता था।

रीतिकाल का वर्गीकरण

रीतिकाल में 'रीति' शब्द का प्रयोग 'काव्यांग निरूपण' के अर्थ में हुआ है। ऐसे ग्रन्थ जिनमें काव्यांगों के लक्षण एवं उदाहरण दिए जाते हैं, रीतिग्रन्थ कहलाते हैं। रीतिकाल के अधिकांश कवियों ने 'रीति निरूपण' करते हुए लक्षण ग्रन्थ लिखे।

'रीति' को आधार बनाकर रीतिकाल का वर्गीकरण तीन भागों में किया गया है-

① रीतिबद्ध काव्यधारा → इस वर्ग में वे कवि आते हैं जो 'रीति' के बन्धन में बँधे हुए हैं, अर्थात् जिन्होंने रीति ग्रन्थों की रचना की। लक्षण ग्रन्थ लिखने वाले इन कवियों में प्रमुख हैं - चिन्तामणि, मतिराम, देव, भिखारीदास, कुलपति मिश्र, सोमनाथ, प्रतापसिंह, मण्डन, सूरति मिश्र आदि।

② रीतिमुक्त काव्यधारा → इस वर्ग में वे कवि आते हैं जो 'रीति' के बन्धन से पूर्णतः मुक्त हैं अर्थात् इन्होंने काव्यांग निरूपण करने वाले ग्रन्थों, लक्षण ग्रन्थों की रचना नहीं की तथा हृदय की स्वतन्त्र वृत्तियों के आधार पर काव्य रचना की। इन कवियों में प्रमुख हैं - घनानन्द, बोधा, आलम और ठाकुर।

③ रीतिसिद्ध काव्यधारा → इस वर्ग में वे कवि आते हैं जिन्होंने रीति ग्रन्थ नहीं लिखे किन्तु 'रीति' की उन्हें भली-भाँति जानकारी थी। वे रीति में पारंगत थे। इन्होंने इस जानकारी का पूरा-पूरा उपयोग अपने काव्य ग्रन्थों में किया। इस वर्ग के प्रतिनिधि कवि हैं - बिहारी। अपने एकमात्र ग्रन्थ 'बिहारी सतसई' में रीति की जानकारी का पूरा-पूरा उपयोग उन्होंने किया है।